12

समावेशी शिक्षा हेतु शिक्षक तैयारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में

अदिति बंसल*
शशि रंजन**

किसी भी देश के सभी नागरिकों के सहयोग के बिना उस देश के समग्र विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। भारत जैसे विकासशील देशों में दिव्यांगों की संख्या बहुत अधिक है और इनके समग्र विकास के बिना देश का संपूर्ण विकास संभव नहीं हैं। अतएव इन दिव्यांगों की औपचारिक विद्यालयी शिक्षा का इतिहास एक बदलते स्वरूप में उभरता हुआ 'समावेशित शिक्षा' के रूप में परिलक्षित होता है। समावेशन से अभिप्राय सभी विद्यार्थियों को बिना किसी बाधा के सामान्य विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने हेतु अनुमति देने से है। इसके लिए विभिन्न शिक्षण कौशलों को उन कार्यक्रमों में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, जो शिक्षकों को विविधता के बारे में सूचित करने, इसके लिए तैयार होने और उचित शिक्षण विधियों का समर्थन करने के लिए प्रशिक्षित करते हैं। विकलांग विद्यार्थियों के प्रति पूर्वाग्रह से निपटने और स्थितियों को सकारात्मक रूप से संभालने के लिए उत्कृष्टता, समानता और समता की अवधारणाओं को सम्मिलित किया जाना चाहिए। समावेशी कक्षाओं ने ऐसे शैक्षणिक परिवेश तैयार किए हैं जिससे विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों सहित सभी विद्यार्थी, समस्याओं और सीखने के माहौल से लाभ उठाने में सक्षम हों। प्रस्तुत शोध आलेख में यह विश्लेषण किया गया है कि शिक्षक अपने विद्यार्थियों के मध्य विभिन्न प्रकार के अंतरों पर किस प्रकार प्रतिक्रिया करते हैं। इसके साथ ही, यह भी अध्ययन किया गया है कि शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में विविधता का अधिक प्रभावी ढंग से उत्तर देने के लिए किस प्रकार के ज्ञान और समझ की आवश्यकता होती है। साथ ही यह भी देखने का प्रयास किया गया है कि शिक्षक विद्यार्थियों के मिश्रित समूहों में कार्य करने के लिए स्वयं को बेहतर ढंग से कैसे तैयार कर सकते हैं। शोधार्थी ने द्वितीयक स्रोतों के आधार पर इन शोध प्रश्नों के उत्तर देने के साथ-साथ, शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों और उनके प्रत्याशित परिणामों के माध्यम से समावेशी शिक्षक तैयारी हेतु एक प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया है।

*एम.एड. विद्यार्थी, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश 244 001
***सहायक आचार्य*, शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश 244 001

प्रस्तावना

विद्यालयों में अध्ययन–अध्यापन के कार्य में संलग्न कुछ शिक्षकों द्वारा दिव्यांग विद्यार्थियों के साथ गैर-दिव्यांग विद्यार्थियों की तुलना में अलग प्रकार का व्यवहार किया जाता है, यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। समावेशी शिक्षा प्रणाली में सभी विद्यार्थियों को प्रगति करने के एक समान अवसर दिए जाते हैं, जिससे सभी को यह अहसास हो कि कोई भी किसी से कमजोर नहीं है। यह स्थिति सभी विद्यार्थियों के समग्र मानसिक विकास को बढ़ावा देती है। यह वातावरण उन्हें सामाजिक और नैतिक गुणों, प्रेम, सहानुभूति और आपसी सहयोग की भावना विकसित करने में मदद करता है। इस प्रकार का परिवेश सृजित करने के लिए शिक्षकों को विशेष शिक्षण कार्यक्रम की आवश्यकता होती है। समावेशी शिक्षा, विशेष शिक्षा की तुलना में अधिक सामाजिक संपर्क को प्रोत्साहित करती है, जिससे दिव्यांगों और गैर-दिव्यांगों दोनों बच्चों के लिए प्राकृतिक रूप से सीखने का माहौल बनाया जाता है। समावेशन का मुख्य कार्य प्रत्येक विद्यार्थी को बिना किसी बहिष्कार व असमानता के शिक्षा देने से है। समावेशन द्वारा विविधता को अत्यधिक महत्व दिया जाता है जो सभी को विकास और शिक्षा के समान अवसर प्रदान करता है। शिक्षा में समान अवसर प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक है। प्राय: यह तर्क दिया जाता है कि समावेशन के मुख्य बाधाओं में से एक है— शिक्षकों में समावेशी शिक्षा के ज्ञान और समझ की कमी और जिसका एक प्रमुख कारण है प्रशिक्षण का अभाव (फ्लोरियन, 2008)। अतएव यह जरूरी है कि कक्षा-कक्ष में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया समावेशी शिक्षा के रूप में संपादित हो और उक्त प्रक्रिया के क्रियान्वयन हेतु शिक्षकों में समावेशी दृष्टिकोण के प्रति जागरूकता विकसित की जाए। शिक्षकों में समावेशी दृष्टिकोण विकसित करने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक-शिक्षा प्रशिक्षण के दौरान उन्हें इस प्रकार तैयार किया जाए कि वे कक्षा में समावेशी वातावरण सृजित करने के प्रत्येक पहलू की गहरी समझ विकसित कर सकें, विशिष्ट शिक्षण विधियों के प्रयोग में दक्ष बनें तथा उन विधियों को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करने में सक्षम हों। इस प्रकार शिक्षक बिना किसी भेदभाव के विभिन्न साधनों द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार की आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को उचित शिक्षा प्रदान करने में सक्षम हो पाएँगे। शिक्षकों को समावेशन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए मुख्य रूप से दो महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है— प्रथम, शिक्षण रणनीतियों की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि क्या पढ़ाया जा रहा है, बल्कि यह इस पर निर्भर करती है कि किसे और कैसे पढ़ाया जा रहा है। द्वितीय, शिक्षकों को यह भी समझना होगा कि सभी विद्यार्थी एक जैसे नहीं होते हैं; वे कई आयामों में एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। कुछ विद्यार्थियों द्वारा सीखने के दौरान अनुभव की जाने वाली कठिनाई शिक्षक द्वारा दी जा रही प्रतिक्रिया को समझने की क्षमता से कहीं अधिक हो सकती है। समावेशी शिक्षा को परिभाषित करते हुए दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम 2016 के अध्याय 1 में कहा गया है कि समावेशी शिक्षा ऐसी शिक्षा पद्धति से अभिप्रेरित है, जिसमें दिव्यांग

एवं सामान्य विद्यार्थी एक साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं तथा शिक्षण और अधिगम की पद्धति विभिन्न प्रकार के दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनुकूलित की गई है (तिवारी और कुमार, 2020)। समावेशी शिक्षा एक ऐसी पहल है जिसके द्वारा सभी बालक एक समान वातावरण में रहकर औपचारिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा के सभी आयाम व जीवन के मूल्यों को सीख सकते हैं। समावेशी शिक्षा प्रत्येक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के लिए एक मील का पत्थर साबित होती है जो उनके जीवन के मूल्यों का विकास करती है तथा उन्हें समाज में एक प्रतिष्ठित नागरिक का दर्जा प्रदान कराती है। समावेशी शिक्षक ऐसा शैक्षिक दृष्टिकोण है जो सभी विद्यार्थियों को उनकी योग्यता, सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि, संस्कृति या भाषा के बावजूद सीखने के अवसर प्रदान करने का कार्य करती है। समानता पर आधारित ये मुख्य धारा शैक्षिक वातावरण में सभी विद्यार्थियों का स्वागत करने और उनका समर्थन करने पर केंद्रित है। सभी विद्यार्थियों को उनकी क्षमता तक पहुँचने में सक्षम बनाने के लिए अनुरूप सहायता प्रदान करती है।

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता

शिक्षक-शिक्षा और सेवा पूर्व शिक्षकों के लिए समावेशी शिक्षा का महत्व अत्यधिक है, क्योंकि यह शिक्षा में समानता और समरसता सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य सभी विद्यार्थियों, विशेष रूप से दिव्यांग, वंचित और विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करना है। ऐसे विद्यार्थियों की जरूरतों को समझने और उनके लिए उपयुक्त शिक्षण विधियों को अपनाने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करना आवश्यक है। समावेशी शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण उन्हें विविधतापूर्ण कक्षाओं में शिक्षण की जटिलताओं से निपटने में सक्षम बनाता है। सेवा पूर्व शिक्षकों के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि कक्षा में सभी विद्यार्थियों की शैक्षिक जरूरतें अलग-अलग हो सकती हैं। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें विशेष तकनीकों, जैसे व्यक्तिगत शिक्षण योजना, सहायक प्रौद्योगिकी और भिन्न मूल्यांकन पद्धतियों का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता है, जो समावेशी शिक्षा के लिए जरूरी हैं। यह न केवल विद्यार्थियों के विकास में सहायता करता है, वरन शिक्षकों को भी आत्मविश्वास और कुशलता प्रदान करता है। इस प्रकार जब शिक्षक समावेशी वातावरण में काम करते हैं, तो वे विद्यार्थियों की विविधता को स्वीकार करते हैं तथा उन्हें सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। यह प्रक्रिया न केवल शिक्षा के गुणवत्ता स्तर को बढ़ाती है, बल्कि एक समतामूलक और सहिष्णु समाज के निर्माण में भी योगदान देती है। शिक्षक शिक्षा और सेवा पूर्व शिक्षकों के लिए समावेशी शिक्षा का प्रशिक्षण केवल एक शैक्षिक आवश्यकता नहीं, वरन यह एक नैतिक जिम्मेदारी है, जो विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य और समाज की प्रगतिशीलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अतएव सेवा पूर्व शिक्षकों और शिक्षक-शिक्षा के लिए समावेशी शिक्षा की समझ और इसका प्रशिक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे शिक्षा प्रणाली का आधार हैं। शिक्षा में समावेशन का तात्पर्य ऐसे शिक्षण वातावरण को

बढ़ावा देना है जो सभी विद्यार्थियों की क्षमताओं, विभिन्न पृष्ठभूमियों और उनके विविधताओं को साथ लाता है और उनका समर्थन करता है। यह औपचारिक विद्यालयी शिक्षा में आने वाली बाधाओं को तोड़ने का प्रयास करता है तथा यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक विद्यार्थी को महत्व दिया जाए, सम्मान दिया जाए और उसे आगे बढ़ने के समान अवसर प्रदान किए जाएँ। समावेशन विद्यार्थी में सहयोग, सहानुभूति और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देता है।

समावेशी शिक्षणशास्त्र की संकल्पना

शिक्षणशास्त्र में शिक्षण और सीखने के विशिष्ट कार्य के साथ-साथ शिक्षकों के विश्वास, धारणाएँ तथा शिक्षण और सीखने से संबंधित दोनों मूल्य सम्मिलित होते हैं। समावेशन एक दार्शनिक दृष्टिकोण है जो लोकतंत्र के मूल्यों और सभी की भागीदारी में निहित है। इसे कई मानदंडों के आधार पर उनके बीच मौजूद मतभेदों के बावजूद शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सभी विद्यार्थियों की भागीदारी और जुड़ाव सुनिश्चित करने की प्रक्रिया के रूप में भी व्याख्या की जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक प्रमुख आकर्षण शिक्षा में समावेशन है तथा इसने एक नया शब्द 'सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूह' (एस.ई.डी.जी.एस.) का प्रयोग किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा एस.ई.डी.जी. शब्द का उपयोग समावेशन के सिद्धांत में इसके दृढ़ विश्वास और समावेशन शब्द को इसके व्यापकतम अर्थ में उपयोग करने की इसकी महत्वाकांक्षा का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब है। एस.ई.डी.जी. हाशिए पर पड़े समूहों, सामाजिक-सांस्कृतिक एवं भौगोलिक पहचान, दिव्यांगता और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के आधार को संदर्भित करता है, जिनका शिक्षा में प्रतिनिधित्व कम है। समावेशी शिक्षणशास्त्र विद्यार्थियों को हाशिए पर जाने से रोकने के लिए विशिष्ट शिक्षण कार्य और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में, समावेशन के संबंध में मूल्य और विश्वास के संश्लेषण से है। इस शिक्षणशास्त्र को एक शैक्षणिक दृष्टिकोण माना जाता है जो विविधता का सामंजस्य करता है। यह इस बात से परिलक्षित होता है कि विद्यार्थी सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में पूर्व ज्ञान और उनके मध्य परस्पर अंतःक्रियाओं के आधार पर सीखता है। इस प्रकार, विद्यार्थियों के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश और उनके सीखने के बीच संबंधों की समझ कक्षा में विविधता को समझने और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में समृद्ध संसाधनों के रूप में सभी विद्यार्थियों पर भरोसा करने के लिए आवश्यक है। अतएव शैक्षिक प्रक्रियाओं में सभी विद्यार्थियों की भागीदारी की संभावना को बढ़ाने के लिए समावेशी शिक्षणशास्त्र का प्रयोग अतिआवश्यक है। समावेशी शिक्षणशास्त्र में विद्यार्थी को केंद्र में रखकर उसकी आवश्यकताओं को समझकर शिक्षा प्रदान की जाती है तथा यह शिक्षणशास्त्र विद्यार्थियों की जरूरतों को समझने की क्षमता विकसित करता है तथा सभी प्रकार के विद्यार्थियों को एक समान वातावरण में शिक्षा देने को प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार समावेशी शिक्षणशास्त्र विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण है। यह सभी विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि के स्तर को भी बढ़ाने में सहायता करता है और उनको संरक्षण प्रदान करता है जो बहिष्करण

के पड़ाव पर खड़े हैं। इस शिक्षणशास्त्र की कक्षाओं में गतिविधियों, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन में विविधता को ध्यान में रखा जाता है। समावेशी शिक्षणशास्त्र शब्द को 2003 में प्रोफेसर फ्रैंक टुइट द्वारा उपयोग में लाया गया था। उच्च शिक्षा में समावेशी शिक्षणशास्त्र पाउलो फ्रेरे, बेल हुक्स, हेनरी गिरौक्स और पीटर मैकलारेन के काम पर आधारित है। टुइट ने समावेशी शिक्षणशास्त्र के लिए पाँच घटकों की कल्पना की। यह पाँच घटक समावेशी शिक्षणशास्त्र की संकल्पना की नींव हैं जो एक समावेशी कक्षा का निर्माण करती है तथा विविधता का सम्मान करती है—

1. संकाय-विद्यार्थी अंतर्क्रिया,
2. अनुभव साझा करना,
3. संवाद (आचार्य-विद्यार्थी के मध्य विचारों की परस्पर अंतर्क्रिया),
4. विद्यार्थियों के आवाज की सक्रियता और
5. व्यक्तिगत कथाओं का उपयोग।

संकाय-विद्यार्थी अंतर्क्रिया— यह उच्च शिक्षा में भागीदारी का एक प्रमुख घटक है। विद्यार्थियों की दृढ़ता और सफलता के अनेक कारकों में से एक कारक संकाय-विद्यार्थी अंतर्क्रिया है। संकाय-विद्यार्थी अंतर्क्रिया का विश्लेषण करना सामुदायिक कॉलेज के विद्यार्थियों के बारे में जानने और उनकी शैक्षणिक गतिविधियों में उनकी सहायता करने का एक तरीका है। संकाय-विद्यार्थी अंतर्क्रिया ज्ञान के आदान-प्रदान और समग्र विकास प्रदान की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करती है। यह संवाद विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम को बेहतर समझने, जिज्ञासाओं का समाधान करने और आलोचनात्मक सोच विकसित करने में सहायता करता है। प्रभावी अंतर्क्रिया शिक्षकों को विद्यार्थियों की शैक्षणिक और व्यक्तिगत जरूरतों को समझने का अवसर प्रदान करती है, जिससे शिक्षण विधियों में सुधार होता है। यह अंतर्क्रिया विद्यार्थियों को आकादमिक स्तर पर न केवल सशक्त बनाती है, बल्कि शिक्षक-विद्यार्थी संबंधों को भी मजबूत करती है।

अनुभव साझा करना— अनुभव साझा करना सभी के लिए सीखने और समझने का एक प्रभावशाली माध्यम है। जब शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक अपने अनुभव साझा करते हैं, तो यह विविध दृष्टिकोणों को सामने लाता है जो समावेशी शिक्षा के महत्व को दर्शाता है। उदाहरण के लिए एक शिक्षक अपने अनुभव से बता सकता है कि उन्होंने विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए, किस प्रकार की शिक्षण पद्धति अपनाई और वह सफल रही। इसी तरह, विद्यार्थी अपने संघर्ष और सफलता की कहानियाँ साझा कर सकते हैं, जिससे अन्य सहपाठियों को प्रेरणा मिलती है। यह प्रक्रिया न केवल सहानुभूति और जागरूकता को बढ़ाती है, बल्कि समावेशी वातावरण को भी सुदृढ़ बनाती है। इस प्रक्रिया में शिक्षक, विद्यार्थी, परिवार और समुदायों के संयुक्त प्रयासों को सम्मिलित किया जाना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कक्षा अभ्यास निष्पक्ष और समावेशी हो, जिससे सभी विद्यार्थियों को उनकी विविध आवश्यकताओं और क्षमताओं के बावजूद सार्थक रूप से भाग लेने की अनुमति मिले।

संवाद (शिक्षक-विद्यार्थी के मध्य विचारों की परस्पर अंतर्क्रिया)— यह न केवल ज्ञान के आदान-प्रदान का माध्यम है, बल्कि विश्वास और

सहयोग का आधार भी बनाता है। संवाद से शिक्षक विद्यार्थियों की समस्याओं, जिज्ञासाओं और उनकी रुचियों को समझ सकते हैं, जबकि विद्यार्थी अपनी शंकाओं का समाधान पाकर अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं। यह प्रक्रिया कक्षा के भीतर सक्रियता को बढ़ाती है और शिक्षा को अधिक प्रभावी और व्यक्तिगत बनाती है। विचारों का यह आदान-प्रदान न केवल शैक्षिक प्रगति को प्रोत्साहित करता है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में भी सहायक होता है।

विद्यार्थियों के आवाज की सक्रियता— विद्यार्थियों के आवाज की सक्रियता शिक्षा में उनकी भागीदारी और सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करती है। जब विद्यार्थियों को अपने विचार, सवाल और सुझाव साझा करने का अवसर मिलता है, तो वे शिक्षा प्रक्रिया में अधिक रुचि और जिम्मेदारी महसूस करते हैं। उनकी आवाज सक्रिय होने से कक्षा में संवाद और सृजनात्मकता बढ़ती है, जिससे सीखने का वातावरण समृद्ध होता है। यह न केवल उनकी आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास को विकसित करता है, बल्कि उनकी आलोचनात्मक सोच और निर्णय लेने की क्षमता को भी मजबूत करता है। सक्रिय आवाज से विद्यार्थी शिक्षण प्रक्रिया के केंद्र में आते हैं, जिससे शिक्षा अधिक प्रभावी और समावेशी बनती है।

वैयक्तिक अध्ययन का उपयोग

समावेशी कक्षा में वैयक्तिक अध्ययन का उपयोग शिक्षा को अधिक प्रभावी और मानवीय बनाने का एक सशक्त माध्यम है। वैयक्तिक अध्ययन विद्यार्थियों की विविध पृष्ठभूमि, अनुभव और दृष्टिकोणों को उजागर करता है, जिससे कक्षा में सहानुभूति, समर्पण और आपसी समझ का विकास होता है। यह शिक्षकों को विद्यार्थियों की विशेष जरूरतों और क्षमताओं को समझने में सहायता करता है, जिससे शिक्षण अधिक अनुकूल और समावेशी बनता है। यह विधि न केवल शिक्षा में विविधता का सम्मान करती है, बल्कि समावेशी कक्षा के उद्देश्य को भी मजबूत करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के सभी स्तरों को आच्छादन करने वाली एक व्यापक नीति है। समतापूर्ण और समावेशी शिक्षा विद्यालयी शिक्षा के अंतर्गत आती है। इसमें वे सभी पहलू शामिल हैं जो दिव्यांग विद्यार्थियों को शिक्षा प्रणाली में पूर्ण रूप से शामिल करने में सहायक होते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए पाँच बिंदुओं की एक संरचना देने का एक प्रयास है (पानीग्रही और मलिक, 2020)। ये पाँच बिंदु कक्षा में समावेशी वातावरण बनाने में सहायता प्रदान करते हैं जिसके द्वारा विविधता को सम्मान प्राप्त होता है और सभी विद्यार्थियों को शिक्षा का समान अधिकार प्राप्त होता है—

1. सकारात्मक दृष्टिकोण
2. विद्यालय की तैयारी
3. संसाधन और सहायता
4. व्यक्तिगत कार्यक्रम
5. लचीला पाठ्यक्रम

सकारात्मक दृष्टिकोण— कक्षाएँ अब विद्यार्थियों की क्षमताओं के संबंध में अधिक विविधतापूर्ण होती जा रही हैं, इसलिए सफल समावेशन को बढ़ावा देने के लिए सामान्य शिक्षा हेतु शिक्षक की ओर से

संवेदनशीलता और जागरूकता आवश्यक है (बंसल, 2016)। समावेशी कक्षा में सकारात्मक दृष्टिकोण शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच सहयोग, सहानुभूति और सम्मान का वातावरण बनाता है। यह दृष्टिकोण प्रत्येक विद्यार्थियों की क्षमताओं और जरूरतों को पहचानते हुए उन्हें प्रोत्साहित करता है। शिक्षकों का सकारात्मक दृष्टिकोण विविध पृष्ठभूमि और क्षमताओं वाले विद्यार्थियों को आत्मविश्वास से सीखने और सहभाग करने में मदद करता है। इससे कक्षा में समानता, भागीदारी और समरसता को बढ़ावा मिलता है, जो समावेशी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। विविधता को प्रभावी रूप से संबोधित करने के लिए एक समावेशी शिक्षक को बहु-आयामी ज्ञान एवं संवेदनशील समझ की आवश्यकता होती है। समावेशी शिक्षा का मूल उद्देश्य यह है कि सभी छात्र, चाहे वे किसी भी सामाजिक, सांस्कृतिक, शारीरिक, मानसिक अथवा भाषायी पृष्ठभूमि से संबंधित हों, एक समान और सम्मानजनक शैक्षिक अवसर प्राप्त करें। इसके लिए शिक्षक को विविधताओं की प्रकृति एवं उनकी शिक्षा पर प्रभावों के संदर्भ में ठोस सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक ज्ञान होना अनिवार्य है। एक समावेशी शिक्षक को यह समझना आवश्यक है कि प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की आवश्यकता भिन्न होती है और उनके लिए शिक्षण-विधियों, सामग्री और मूल्यांकन प्रक्रियाओं में अनुकूलन आवश्यक हो सकता है। उसे विविध अधिगम शैलियों, बहु-बुद्धि सिद्धांत और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों की भूमिका को समझने की आवश्यकता होती है, ताकि वह लचीली और छात्र-केंद्रित शिक्षण रणनीतियाँ अपनाकर सभी छात्रों को प्रभावी ढंग से संबोधित कर सके। साथ ही, शिक्षक को सहायक तकनीकों, व्यक्तिगत शैक्षिक योजना और सहयोगात्मक शिक्षण जैसे समावेशी उपायों की समझ होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, शिक्षक के भीतर पूर्वाग्रह-रहित दृष्टिकोण, सहानुभूति, संवेदनशीलता और व्यावहारिक बुद्धिमत्ता जैसी भावनात्मक एवं नैतिक क्षमताओं का होना भी अत्यंत आवश्यक है, ताकि वह कक्षा में सकारात्मक, सहभागी एवं न्यायसंगत वातावरण निर्मित कर सके।

विद्यालय की तैयारी— समावेशी शिक्षा के लिए विद्यालय की तैयारी के लिए सुलभ सुविधाएँ विकसित करना, कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करना और विविध शिक्षार्थियों को समायोजित करने के लिए अनुकूलनीय शिक्षण विधियों को लागू करना आवश्यक है जो यह सुनिश्चित करता है कि विद्यालय सभी विद्यार्थियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए पूरी तरह से सुसज्जित है, जिससे सीखने के अवसर के लिए समान अवसरों को बढ़ावा मिलता है।

संसाधन और सहायता— समावेशी शिक्षा में, संसाधन और सहायता प्रदान करने में विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सहायक तकनीक, अनुकूलित शिक्षण सामग्री और व्यक्तिगत सेवाएँ प्रदान करना शामिल है।

व्यक्तिगत कार्यक्रम— व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम, शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यालय समूह आधारित विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं का आकलन करता है, विद्यार्थियों के कार्यक्रम को निर्देशित करने वाले सार्थक और

मापनीय लक्ष्य विकसित करता है, विशेष शिक्षा और संबंधित सेवाओं का कार्यक्रम विकसित लागू करता है और अपने लक्ष्यों की ओर विद्यार्थियों की प्रगति की निगरानी करता है (क्रिस्टल और येल, 2010)। व्यक्तिगत कार्यक्रम विद्यार्थियों की विशेष जरूरतों, क्षमताओं और लक्ष्यों को ध्यान में रखकर तैयार किए जाते हैं। व्यक्तिगत कार्यक्रम शिक्षण पद्धतियों, संसाधनों और समर्थन को अनुकूलित करते हैं, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी को सीखने में समान अवसर मिल सके। यह प्रक्रिया न केवल विद्यार्थियों की प्रगति सुनिश्चित करती है, बल्कि समावेशी और सहायक कक्षा का आधार भी बनाती है। इस प्रकार यह कार्यक्रम एक न्यायसंगत और सहायक वातावरण को बढ़ावा देने पर केंद्रित है जहाँ एक विद्यार्थी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकता है और शैक्षणिक एवं सामाजिक दोनों गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल हो सकता है।

लचीला-पाठ्यक्रम— जैसे कि ऊपर चर्चा की गई है, पाठ्यक्रम हमेशा विद्यार्थियों की समस्याओं को पूरा करने के लिए गतिशील होना चाहिए। इसलिए, इसे अलग तरह से व्यवहार किया जाना चाहिए। सबसे पहले, पाठ्यक्रम विकास को एक सतत, गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए; हमेशा नियोजित परिवर्तनों की स्थिति में होना चाहिए। दूसरा, पाठ्यक्रम अभिकल्प की प्रक्रिया अनुकूलनीय और कई अलग-अलग विषयों और स्थितियों के लिए लागू होनी चाहिए। अंत में, पाठ्यक्रम निर्माण में शिक्षक की प्राथमिक भूमिका होनी चाहिए। उन्हें अपने विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम की पहचान करने में द्वितीयक स्थिति में नहीं रखा जाना चाहिए (मिश्रा, होटा और खमारी, 2019)। लचीला पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को उनके सीखने की गति और शैली के अनुसार सामग्री तक पहुँचने और समझने का अवसर देता है। इसमें विविध शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन के विकल्प और सहायक उपकरण शामिल होते हैं। यह सभी विद्यार्थियों को समान रूप से सीखने और प्रगति करने में सक्षम बनाता है।

सतत विकास एजेंडा 2030 के हस्ताक्षरकर्ता के रूप में भारत भी पढ़ाई में कमजोर विद्यार्थियों के लिए सभी स्तरों पर शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण सुनिश्चित करने हेतु प्रतिबद्ध है। इसके लिए भारत में समावेशी शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समतामूलक और समावेशी शिक्षा को स्वयं में एक आवश्यक लक्ष्य मानते हुए समाज निर्माण के लिए इसे एक आवश्यक साधन के रूप में स्वीकार करती है। इसके लिए इस नीति में पूर्व विद्यालयी स्तर से ही दिव्यांग विद्यार्थियों का समावेशन करने तथा उनकी समान भागीदारी सुनिश्चित करने की अनुशंसा की गई है। इस नीति में इस बात पर विशेष जोर दिया गया है कि दिव्यांग विद्यार्थियों को प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक की शिक्षा सुलभ कराने के लिए राज्य हर संभव प्रयत्न करेगा। नीति में इन विद्यार्थियों के लिए नियमित या विशेष विद्यालयी शिक्षा का विकल्प उपलब्ध कराने की बात की गई है (यादव एवं यादव, 2021)। यह नीति शिक्षा में विशेष रूप से वंचित और दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए समानता और समरसता को बढ़ावा देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत सभी

विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने, विशेष जरूरतों वाले विद्यार्थियों के लिए सहायक साधन और बुनियादी ढाँचा उपलब्ध कराने पर जोर दिया गया है। एन.ई.पी. 2020 लचीले पाठ्यक्रम, व्यक्तिगत शिक्षण योजनाओं और तकनीकी सहायक उपकरण के उपयोग को प्रोत्साहित करती है। यह शिक्षक प्रशिक्षण और जागरूकता बढ़ाने पर भी ध्यान केंद्रित करती है, जिससे समावेशी कक्षाओं के लिए बेहतर और संवेदनशील वातावरण का सृजन किया जा सके।

शिक्षक शिक्षा

शिक्षा प्रणाली के मुख्य स्तंभ के रूप में शिक्षक को देखा जाता है। शिक्षकों को अपने देश की उन्नति में राष्ट्र निर्माता के रूप में भी संदर्भित किया जाता है (कुमार, 2023)। शिक्षा प्रक्रिया के तीन मुख्य घटकों में शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है— विद्यार्थी, पाठ्यक्रम और शिक्षक। बेहतरीन शिक्षक के बिना सबसे अच्छे विद्यार्थी भी आवश्यक ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते हैं। योग्य शिक्षकों के बिना सबसे अच्छे पाठ्यक्रम भी बेजान हो जाते हैं। वयस्कों और विद्यार्थियों के साथ काम करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान सभी शिक्षक तैयारी पाठ्यक्रमों का एक अनिवार्य तत्व होना चाहिए (फ्लोरियन, 2012)। शिक्षक शिक्षा संस्थान का उद्देश्य ऐसे शिक्षकों को तैयार करना है जो समावेशी कक्षाओं में विद्यार्थियों को सिखाने के लिए इच्छुक हों। इसके लिए सेवा-पूर्व शिक्षक को समावेशी शिक्षक की बेहतर तैयारी में सकारात्मक मूल्यों और विश्वासों को विकसित करना ही पर्याप्त नहीं है, वरन पाठ्यक्रम सामग्री, व्यावहारिक अवसर और दिव्यांग विद्यार्थियों के साथ अनुभव सभी को समावेशी कक्षाओं में सम्मिलित करना पड़ेगा। कक्षा-कक्ष में अध्यापनकार्य एवं उसके प्रबंधन में संलग्न शिक्षकों को समावेशी शिक्षा के दर्शन और उसकी अवधारणा के प्रति संवेदनशील बनाया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक शिक्षा और समावेशी शिक्षा का मार्गदर्शन

सरकार ने एक व्यापक राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पेश करके इसे पुनर्जीवित करने का निर्णय लिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारत-केंद्रित शिक्षा प्रणाली पर केंद्रित है, जो उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करके हमारे देश को फिर से विश्व गुरु बनाने में योगदान देगी। एन.ई.पी. 2020 में समावेशी शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। इस नीति में दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष सहायता, जैसे कि सहायक उपकरण, ब्रेल पुस्तकें और थैरेप्यूटिक सेवाएँ प्रदान करने की बात की गई है। इसके अलावा, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में समावेशी दृष्टिकोण को शामिल करने की सिफारिश की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक शिक्षा में नवीन बड़े बदलावों की सिफारिश करती है। शिक्षक शिक्षा पर सिफारिशें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय पंद्रह में दी गई हैं जो शिक्षा में नीतिगत बदलावों का विवरण देती है। इसे ग्यारह उप-बिंदुओं में विभाजित किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का सबसे बड़ा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि शिक्षकों को अध्ययन सामग्री, शिक्षण और कौशल के विकास में उच्चतम गुणवत्ता वाला प्रशिक्षण दिया जाए और शिक्षक शिक्षा प्रणाली को बहु-विषयक संकायों और विश्वविद्यालयों में

पेश किया जाए और 4-वर्षीय एकीकृत बी.एड. की स्थापना की जाए (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 15.5)। एन.ई.पी. 2020 में शिक्षक पेशेवर विकास पर जोर दिया गया है। एन.ई.पी. 2020 के अनुसार, शिक्षक-शिक्षा में आधुनिक तकनीकी उपकरणों और संसाधनों का उपयोग बढ़ाना चाहिए। एन.ई.पी. 2020 में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के सुधार की बात की गई है, जिसमें मूलभूत ज्ञान विशेष शिक्षा विधियाँ और समावेशी शिक्षा जैसे विषयों को प्रमुखता से शामिल किया जाएगा। नीति में शिक्षकों से यह अपेक्षित है कि वे अपने कक्षा-कक्षों में एक समावेशी वातावरण तैयार करें, जहाँ सभी विद्यार्थियों की जरूरतों का सम्मान किया जाए। इसमें दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष व्यवस्थाएँ और सहायक उपकरणों का समावेश किया जाएगा। समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए करिकुलम में क्रॉस डिसैबिलिटी का ध्यान रखा जाएगा, ताकि सभी प्रकार की दिव्यांगताओं से प्रभावित बच्चों के लिए समान अवसर प्रदान किए जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अधिक गहराई से विश्लेषण करने पर यह कहा जा सकता है कि यह अवसरों का एक विचित्र संयोजन है और यह शिक्षक-शिक्षा की स्थिति को बदलने के लिए एक उचित दस्तावेज है (दीक्षित, 2020)। यह शिक्षा नीति समावेशी वातावरण के निर्माण में शिक्षक-शिक्षा को केंद्रीय भूमिका प्रदान करती है। शिक्षा नीति इस बात पर भी बल देती है कि शिक्षकों को विभिन्न पृष्ठभूमि, क्षमताओं और विशेष जरूरतों वाले विद्यार्थियों के साथ प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किया जाए। इसके तहत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में समावेशी शिक्षा, विशेष शिक्षण विधियाँ और तकनीकी सहायता का समावेश अनिवार्य किया गया है। शिक्षकों को संवेदनशीलता और विविधता को स्वीकारने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, जिससे वे विद्यार्थियों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। यह दृष्टिकोण समावेशी और समान शिक्षा प्रणाली के निर्माण में सहायक है।

समावेशी शिक्षा के लिए सेवा-पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण का महत्व

सेवा-पूर्व शिक्षक वह विद्यार्थी होता है, जिसने शिक्षा की डिग्री हासिल की है और जो एक पेशेवर शिक्षक की देख-रेख में सेवा-पूर्व शिक्षक के रूप में कार्य करता है। यह शिक्षक प्राथमिक या माध्यमिक विद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा होता है। प्रशिक्षण के दौरान, सेवा-पूर्व शिक्षक या तो शिक्षक द्वारा दिए गए निर्देशों का बारीकी से निरीक्षण करता है या कक्षा में उनके निर्देशों का पालन करते हुए विद्यार्थियों को पढ़ाता है। शिक्षा पूरी करने के बाद, वह शिक्षक के रूप में अपने कर्तव्यों की शुरुआत करता है। इस प्रशिक्षण प्रक्रिया में, उसका शिक्षक प्रशिक्षक ही उसका रोल मॉडल होता है, जो उसे शैक्षिक और व्यावसायिक दृष्टिकोण से मार्गदर्शन प्रदान करता है। अतः सेवा-पूर्व शिक्षकों को इस प्रकार का प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए कि वे भविष्य में सभी विद्यार्थियों को समान रूप से ज्ञान अर्जन करने का समान अवसर प्रदान करें तथा उनमें कोई भी भेदभाव न करें। विद्यार्थियों की योग्यताओं के आधार पर शैक्षिक गतिविधियों को आयोजित करें। भविष्य के शिक्षकों को इस प्रकार से प्रशिक्षित करें कि वह अपनी जिम्मेदारियों को समझें

और सभी विद्यार्थियों को समान रूप से शिक्षा प्रदान करें। सेवा-पूर्व शिक्षक को प्रशिक्षित शिक्षकों के द्वारा कक्षा में विविधता को समझना और उसका सम्मान करना, सहयोग, सकारात्मक व्यवहार, शिक्षा तक सभी की पहुँच, शिक्षा में लचीलापन आदि योगदान के द्वारा समावेशी शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं समावेशिता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जिन कई चीजों ने लोगों का ध्यान खींचा है, उनमें से एक विषय समावेश और समानता की अवधारणा के इर्द-गिर्द घूमता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में न केवल बच्चों और युवाओं, बल्कि विशेषकर लड़कियों के लिए समान और समावेशी शिक्षा की परिकल्पना की गई है। सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों से संबंधित बच्चों के समाज की मुख्यधारा में आए बिना पीछे रह जाने की संभावना अधिक होती है। हालाँकि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा के क्षेत्र में कई सुधार पेश किए हैं, लेकिन यह दिव्यांग बच्चों की शिक्षा में व्यापक नीतिगत अंतराल के दायरे में बना हुआ है। सरकार के प्रयासों और विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों की भागीदारी के बावजूद, भारत में समावेशी शिक्षा की राह लंबी और घुमावदार रही है। शिक्षा कोई विशेषाधिकार नहीं है और हर बच्चे को इसका लाभ मिलना चाहिए (सुकुमार, 2023)। यह शिक्षा नीति समावेशी शिक्षणशास्त्र को बढ़ावा देकर शिक्षा को समान और सुलभ बनाने पर बल देती है। समावेशी शिक्षणशास्त्र में व्यक्तिगत शिक्षण योजना, सहायक प्रौद्योगिकी और लचीले पाठ्यक्रम के माध्यम से सभी विद्यार्थियों की जरूरतों को पूरा करने पर ध्यान दिया गया है। इसके साथ, शिक्षक प्रशिक्षण में समावेशी दृष्टिकोण को शामिल कर संवेदनशीलता और विविधता को अपनाने पर जोर दिया गया है जो समावेशी शिक्षा के उद्देश्य के सपने को साकार करता है।

भारत सरकार की समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए किए गए प्रयास

भारत सरकार ने समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण पहल की हैं, जिनका उद्देश्य सभी बच्चों को समान अवसर प्रदान करना है। इनमें प्रमुख हैं— सर्व शिक्षा अभियान और समग्र शिक्षा 2001, आ.टी.ई. अधिनियम 2009 (जिसने 6–14 वर्ष के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा को मौलिक अधिकार बना दिया), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023, जादुई पिटारा 2022 इत्यादि शामिल हैं। शिक्षा मंत्रालय ने रा.शै.अ.प्र.प. के माध्यम से ई-पाठशाला पोर्टल और मोबाइल ऐप विकसित किया है, जो छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों को मुफ्त डिजिटल सामग्री और ऑडियो बुक प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष शिक्षण विधियों और सहायता उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है। एन.ई.पी. 2020 में यह भी बताया गया है कि समावेशी शिक्षा के लिए समुदाय और परिवारों का सहयोग आवश्यक है। शिक्षा की इस प्रक्रिया में विभिन्न

संगठनों और सामाजिक सेवा समूहों को जोड़ने की आवश्यकता है, ताकि दिव्यांगताओं वाले बच्चों के लिए एक मजबूत समर्थन प्रणाली तैयार की जा सके।

शिक्षक अपने विद्यार्थियों के मध्य विभिन्न प्रकार के अंतरों पर किस प्रकार प्रतिक्रिया करते हैं?

साहित्य समीक्षा से मालूम होता है कि समावेशी शिक्षा के संदर्भ में शिक्षक, विद्यार्थियों के मध्य मौजूद विभिन्न प्रकार के अंतरों जैसे— शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषाई तथा आर्थिक स्तर पर सकारात्मक और सहानुभूतिपूर्ण प्रतिक्रिया देते हैं। वे प्रत्येक विद्यार्थी की विशिष्ट आवश्यकताओं, क्षमताओं और पृष्ठभूमियों को समझने का प्रयास करते हैं तथा भिन्नताओं को समस्या के बजाय एक संसाधन और अवसर के रूप में स्वीकार करते हैं। समावेशी शिक्षक, शिक्षण विधियों, सामग्री और आकलन प्रक्रिया को इस प्रकार अनुकूलित करते हैं कि सभी विद्यार्थियों को सीखने में सहायता मिले। वे विविधता को कक्षा की शक्ति मानते हुए सहभागिता, सहयोग और आपसी सम्मान का वातावरण बनाते हैं जिससे सभी विद्यार्थी समान रूप से भाग ले सकें और अपनी पूरी क्षमता तक पहुँच सकें। इस प्रक्रिया में शिक्षक निष्पक्षता, धैर्य और लचीलापन अपनाते हैं, जिससे सभी प्रकार के विद्यार्थी सुरक्षित, समर्थ और प्रेरित महसूस करते हैं।

शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में विविधता का अधिक प्रभावी ढंग से उत्तर देने के लिए किस प्रकार के ज्ञान और समझ की आवश्यकता होती है?

समावेशी शिक्षा के संदर्भ में शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में विविधता का प्रभावी ढंग से उत्तर देने के लिए विविध प्रकार के ज्ञान और समझ की आवश्यकता होती है। सबसे पहले, उन्हें विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं और पृष्ठभूमियों की गहरी समझ होनी चाहिए, जैसे शारीरिक व मानसिक अक्षमताएँ, भाषायी विविधता, सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ और सांस्कृतिक भिन्नताएँ। इस समझ के आधार पर शिक्षक सभी बच्चों को सम्मान और समता का वातावरण देने के लिए प्रतिबद्ध हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, उन्हें समावेशी शिक्षा की अवधारणा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और संबंधित नीतियों की जानकारी होनी चाहिए, ताकि वे कक्षा में न्यायपूर्ण और सहयोगात्मक वातावरण बना सकें। शिक्षण की दृष्टि से, उन्हें बाल-केंद्रित, गतिविधि-आधारित तथा लचीली शिक्षण रणनीतियों का प्रयोग करना आना चाहिए, जो बच्चों की भिन्न-भिन्न सीखने की शैलियों और गति को संबोधित करें। एक समावेशी शिक्षक के लिए सहानुभूति, धैर्य, संवेदनशीलता और भेदभाव-रहित दृष्टिकोण आवश्यक गुण हैं। साथ ही, उन्हें विशेष शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के साथ सहयोग करने की क्षमता भी विकसित करनी चाहिए। अंततः, शिक्षक को निरंतर प्रशिक्षण, आत्ममूल्यांकन और नवाचार के लिए तैयार रहना चाहिए, ताकि वे समावेशी शिक्षा के लक्ष्यों को प्रभावी रूप से साकार कर सकें।

शिक्षक विद्यार्थियों के मिश्रित समूहों में कार्य करने के लिए स्वयं को बेहतर ढंग से कैसे तैयार कर सकते हैं?

शिक्षक को समावेशी शिक्षण की सिद्धांतात्मक नींव, जैसे सामाजिक न्याय, समान अवसर और

विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण पद्धतियों का ज्ञान होना अनिवार्य है। साथ ही, उन्हें निरंतर प्रशिक्षण, कार्यशालाओं, और समावेशी शिक्षा से संबंधित अद्यतन पाठ्यक्रमों के माध्यम से अपनी शैक्षिक दक्षताओं को विकसित करना चाहिए। शिक्षकों को सहायक तकनीकों, वैकल्पिक मूल्यांकन विधियों, और व्यक्तिगत शैक्षिक योजनाओं की योजना व क्रियान्वयन में प्रवीणता प्राप्त करनी चाहिए, जिससे वे प्रत्येक विद्यार्थी की विशिष्ट आवश्यकताओं को पहचानकर उनके लिए उपयुक्त अधिगम अनुभव निर्मित कर सकें। इसके अतिरिक्त, उन्हें सहयोगात्मक शिक्षण, सहपाठी सहायता, और बहु-बुद्धि दृष्टिकोण जैसे विविध शिक्षण रणनीतियों का अभ्यास करना चाहिए। भावनात्मक रूप से, एक समावेशी शिक्षक को सहानुभूति, धैर्य, लचीलापन और निष्पक्ष दृष्टिकोण विकसित करना होता है, जिससे वह एक स्वागतशील और सुरक्षित कक्षा वातावरण बना सके। अंततः, शिक्षकों को आत्मचिंतन, सहकर्मी सहयोग, तथा समुदाय एवं अभिभावकों के साथ समन्वय बनाकर एक सहभागी एवं उत्तरदायी शैक्षिक परिवेश तैयार करना चाहिए। उचित सहयोग न मिले तो उन्हें मानसिक तनाव होना स्वाभाविक है। दिव्यांग विद्यार्थियों को कैसे पढ़ाया जाए, को सभी अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रमों का अभिन्न अंग बनाकर जागरूकता एवं ज्ञान का निर्माण, अकादमिक संस्थाओं में सहयोग, समर्थन एवं संसाधनों को साझा किया जाना, विभिन्न मापकों द्वारा समता, भवनों एवं सुविधाओं को दिव्यांगों के अनुकूल बनाना। इसके अतिरिक्त शैक्षणिक संस्थानों में आकलन एवं मूल्यांकन को गुणवत्तापूर्ण बनाने हेतु बुनियादी शिक्षा से उच्च शिक्षा तक के (प्रवेश परीक्षाएँ भी सम्मिलित) आकलन एवं प्रमाणन परिस्थितिकी तंत्र हेतु राष्ट्रीय आकलन केंद्र 'परख' की स्थापना, जैसे नवाचारी प्रावधान किए गए हैं।

निष्कर्ष

उपरोक्त सभी तथ्यों और बिंदुओं को देखकर हम यह कह सकते हैं कि समावेशी शिक्षा आज के वर्तमान समय की मांग है। किसी भी देश का सर्वांगीण विकास तभी संभव जब उस देश का कोई भी विद्यार्थी शिक्षा से वंचित नहीं रहे और यह तभी संभव है जब कक्षाओं में सभी विद्यार्थियों के समावेशन के साथ-साथ प्रत्येक शिक्षक समावेशी शिक्षणशास्त्र का उपयोग करें। शिक्षकों को एक समानता का वातावरण कक्षा के अंदर सृजन करना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जो समावेशी शिक्षा को लेकर प्रस्ताव रखे गए हैं, उन पर जल्द से जल्द अमल किया जाना चाहिए। शिक्षक शिक्षा को मजबूती से स्थापित करना आवश्यक है। सेवा-पूर्व प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों को इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि वे भविष्य में कक्षा में समावेशी वातावरण सुनिश्चित कर सकें। इस प्रशिक्षण में उन्हें समावेशी शिक्षण पद्धतियों, विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने और उन तक पहुँचने के तरीकों से अवगत कराया जाए, ताकि वे विद्यार्थियों के विविधतापूर्ण समूहों के बीच समावेशिता और समान अवसर प्रदान कर सकें। समावेशी शिक्षणशास्त्र विद्यार्थी केंद्रित दृष्टिकोण है;

जिसमें विद्यार्थी को केंद्र में रखकर शिक्षा प्रदान की जाएगी जहाँ शिक्षक एक सुविधा प्रदाता के समान होगा, शिक्षक का कार्य केवल विद्यार्थियों को उचित सुविधा प्रदान कराना है तथा विद्यार्थी अपने अनुसार सीखेंगे और समझेंगे। विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान न देकर उनके अनुभवों के आधार पर सिखाया जाना चाहिए। अतः समावेशी शिक्षा का ज्ञान आज के समय में अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ

क्रिस्टल, सी.ए. और एम.एल. येल. 2010. इंडिविजुअलाइज्ड एजुकेशन प्रोग्राम्स. *लीगल रिक्वायरमेंट्स एंड रिसर्च फाइंडिंग्स, एक्सेप्शनलिटी*. पृ.सं. 109–123.

कुमार, ए. 2023. हिंदी सिनेमा में दिव्यांगों के समावेशी शिक्षा की संकल्पना. *प्राथमिक शिक्षक*, 47(2), पृ.सं. 5–13.

कुमार, एस. और जी. राणा. 2014. प्रीपेयरिंग प्री-सर्विस टीचर्स फॉर इंक्लूसिव एजुकेशन. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिव्यु*. 7(3), पृ.सं. 519–522.

तिवारी, ए. और ए. कुमार. 2020. आत्म निर्धारण के संज्ञानात्मक मूल्यांकन सिद्धांत पर आधारित समावेशी शिक्षा. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. 40(4), पृ.सं. 80–91.

दीक्षित, आर.के. 2020. *नेशनल एजुकेशन पॉलिसी— अपॉर्च्यूनिटीज एंड चैलेंजेस इन टीचर एजुकेशन*. https://scholar.google.com/scholar?hl=en&as_sdt=0%2C5&q=nep+2020+ma+teacher+education&btnG=#d=gs_qabs&t=1709562828244&u=%23p%3DWY7CN6HlOhgJ

प्रसाद, आर. 2023. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में अकादमिक दुश्चिंता— एक अनुभवात्मक अध्ययन. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. पृ.सं. 75–90.

पानीग्रही, एस.पी. और एन. मलिक. 2020. ए रोडमैप टू इन्क्लूसिव एजुकेशन इन एन.ई.पी. 2020. *जुनी ख्यात*. 10(10), पृ.सं. 41–47.

फ्लोरियन, एल. 2008. इन्क्लुसन, स्पेशल और इंक्लूसिव एजुकेशन— फ्यूचर ट्रेंड्स. *ब्रिटिश जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन*. 35(4), पृ.सं. 202–208. https://doi.org/10.1111/j.1467-8578.2008.00402.x

फ्लोरियन, एल. 2012. टीचर एजुकेशन फॉर इन्क्लुसन. *फ्यूचर डायरेक्शन फॉर इंक्लूसिव टीचर एजुकेशन*. पृ.सं. 212–220. ऑक्सन, रूटलेज, यूके.

बंसल, एस. 2016. एटिट्यूड ऑफ टीचर्स टुवार्ड्ज़ इन्क्लूसिव एजुकेशन इन रिलेशन टू देयर प्रोफेशनल कमिटमेंट. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज— एन इंटरडिस्प्लिनरी जर्नल*. 3(1), पृ.सं. 96–108.

मिश्रा, पी., एस. होटा और पी. खमारी. 2019. करिकुलम अडॉप्शन इन्क्लूसिव एजुकेशन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च*. 5(8), पृ.सं. 70–74.

यादव, वी. और ए. यादव. 2021. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा. *प्राथमिक शिक्षक*. 45(2), पृ.सं. 5–17.

विर्त, एल. और ए.जे. जैगर. 2014. सीकिंग टू अंडरस्टैंड फैकल्टी-स्टूडेंट्स इंटरेक्शन ऐट कम्युनिटी कॉलेजस. *कम्युनिटी कॉलेज जनरल ऑफ रिसर्च एंड प्रैक्टिस*. 38(11), पृ.सं. 980–994.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. पृ.सं. 68–69. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

सिंह, डी.ए., डी.ए. राय और पी.ए. बाजपेयी. 2024. ए स्टडी ऑफ टीचर ट्रेनीज परसेप्शन ऑफ इंक्लूसिव पेडॉगोजिकल प्रैक्टिसेज. *एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन— थ्योरी एंड प्रैक्टिस*. 30(1), पृ.सं. 3097–3104.

सिंह, वी. 2021. बिहार में वर्तमान समय में समावेशी शिक्षा— दशा एवं दिशा. *स्कॉलर रिसर्च जर्नल फॉर इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज*. 8(63), पृ.सं. 2278–8808.

सुकुमार, एस. 2023. *इंक्लूसिव एजुकेशन इन इंडिया*. https://educationtodayonline.com/2023/01/03/magazines/inclusive-education-inindia/

हिजरी, जे. 2020. *समावेशी शिक्षण टूलकिट.* https://acrl.libguides.com/inclusivepedagogy/definitions